अध्याय : सप्तम
मूल्यांकन एवं निष्कर्ष
'नवगीत' की संज्ञा आज जिन चर्चाओं को दी जा रही है, वे 'नवगीत' आज से हजारों तक पहले लिखे जा चुके थे। 'नवगीत' एक सामाजिक शब्द है। नवगीत की नवीनता युग-साध्यता होती है। किसी भी युग में नवगीत की चर्चा हो सकती है। गीत-रचना की परंपरागत पद्धति और भाववृत्ति को छोड़कर नवीन पद्धति और विचारों के नवीन अभावों तथा नवीन भाव-सारणियों को अभिव्यक्त करने वाले गीत जब भी और जिस युग में लिखे जाएं, 'नवगीत' कहलाएँगे।

आज का युग नया युग है। अतः नए युग में उद्धुत होने वाली हर चीज नई है, जैसे नई कहानी, नया उपन्यास, नया साहित्य, नवगीत, आदि। नवगीत में परंपरा से हटकर छोटे और खास रूप से लघुकथा है। नई कहानियाँ के दौरान जिस कार्यवाही ने अपनी और स्वतंत्र ध्यान आकर्षित किया और जिसके अंतर्गत प्रसंग संरचना में चर्चाएँ प्रस्तुत की गईं, उसे बिना किसी बिलास के नवगीत के रूप में अंकित किया जा सकता है। सन् 1960 के आस-पास नवगीत - नया गीत या आज का गीत का नया लम्बाई गया था, जिसमें संयुक्त सिंह, ढाकुर प्रसाद सिंह, केदाराभाषी सिंह, डॉ. सुदर्शन सिंह, डॉ. रामचंद्र सिंह, ओमप्रभाकर, आदि द्वारा नवगीतकार सम्प्रदाय थे। परंतु नवगीत के नाम पर सर्वप्रथम लिखा गया लेख डॉ. संभुनाथ सिंह का है जो सन् 1964 में प्रकाशित हुआ। इसमें नई कविता एवं नवगीत में एकत्रित साध्यता की गई है। ""वैसे नवगीत का प्रारूपण भी नई कविता की भौतिक मिलता से जोड़ा जाता है।"

छायावाद की प्रचलित तीक्ष्णता को अनुप्रयोगी, अ-व्यक्तिक और भाषाभिविधियों के भार्य में वाभक सिद्ध करते हुए निराकार ने अपने पर्यवेक्षकों में अनेक ऐसे प्रयोग किए हैं, जो सिद्ध एवं छोटे दृष्टि से ही नहीं, अनुभूति, भाषा, एवं प्रतीक के रूप में भी इन्हीं के पूर्ववर्ती गीतों की तुलना में एकदम अलग नए एवं विशेष प्रभावशाली लगते हैं।

इन कवियों के अतिरिक्त गिरिजा कुमार यादव, अटोर, धर्मवीर भारती, जगदीश चंद्र गुप्ता आदि नवगीत का नया धरतील दिया। नवगीतों में सहानुभूति की प्रभावना, संकस्थला, गृह, राग की प्रभावीता, और उसे समस्त जीवन में भोगे की तुलना में प्रवृत्तियों की उल्लेखनीय हैं। बल्कि इस दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण गीतकार हैं। 'मथुराला' से हटकर उन्होंने जो गीत-रचना की, वह हिंदी के लिए एक परंपरा बन गई।

नवगीतकारों का कोई दल या समूह नहीं है। नवगीतकार दूसरे गीतकार के चरण-चिन्हों पर चलना व उसके साथ में हल्ला स्थीर करता नहीं करता है। वह एक-दूसरे के कथ्य, जीवन-रूपन तथा शिल्प तीतों में अलग-अलग है। नवगीतकारों को कोई समानता का बिना है, तो वह है परंपरागत गीत बोध से हटकर स्वातंत्र्य
एवं सौदर्य के नूतन बोध को शब्दायित करने की आकांक्षा इसी कारण किसी का बोध ग्रंथित-वलयित होता है; किसी की संबद्धिता व्यक्तित्व होती है; किसी की सामाजिक; किसी के चित्रण में आंचलिकता का सम्मोहन; कोई चंद्र को अभिविभक्त समझता है; तो कोई छंदहीनता को; किसी के अध्ययन के प्रति आग्रह भाव है तो किसी में कलात्मकता के प्रति उदासीनता है। नवगीतकार में चित्रण की स्वाधीनता उसे एक एक परमांत सीतों से अलग करती है; तो दूसरी ओर किसी शास्त्रीय प्रभुत्व वैचारिक जड़ता से भी बचती है। उससे वीतों में न तो वाणिक हुई आ पाती है और न ही निर्विवक्तता भावान्वित; संस्कृतता; एवं ताजगी ये तीनों रूप भी नवगीतों में उपलब्ध हैं।

नवगीतकार केवल विद्वानों के चित्र भर नहीं खींचते; वे शोभित और दिलित समाज को जगाने का भी महत्त्व करते हैं। वे जाते हैं कि व्यक्ति के खिलाफ जब तक लोगों को जगाया नहीं जाएगा; परिवर्तन असंभव है। हर वृग में जब-जब क्रांति हुई है; उसकी पुरुषभूमियों में आदर्श आ नहीं रहा है। बदलाव की अनुपूर्णता रही है। नवगीत ने छायावादी बोध के बिन्दु मयूर पर अपनी एक नई परंपरा की शुरुआत की थी। इसका परिवर्तन वह हुआ कि गीत आदर्श को उत्तरक धर्मत पर विचार करने लगा। यह नया अर्थ में लोक-चित्रण से हुआ। आज जो नवगीत हमारे सामने है; उसे देखकर उसका चित्रण संपूर्ण हो जाता है। "आज का गीत न तो लोक-जीवन से विद्युद न; न नागरिक जीवन से उपकर; न तो राष्ट्र की भौगोलिक सीमा से बदल और न अंतरराष्ट्रीय स्थितियों से तत्त्व है।" नया गीतकार अपने परिवेश के प्रति सजग तथा असिल के प्रति व्यापक रूप से सरकर है। परिवेश और वृग-जीवन के प्रति उसकी यही सजगता उसके स्वर की नवीनता के लिए उत्तरदायी है।

नवगीत में अभिव्यक्ति की सृष्टि अधिक है; क्योंकि नवगीतकार व्यक्तित्व की खोज और आत्मोप्लक्ष की प्रकृति भर में ही मानने की अभिव्यक्ति पूर्ति गई है। वे जो चाहते हैं; उन्हें ही से संबंध न रहता अपनी सर्वनामक वास्तविक क्रांति द्वारा मूल्यक के उस महत्वपूर्ण और विशेष व्यक्तित्व व का प्रारूप विचित्र करते हैं; जो मानने के भीतर निहित है। आधुनिक जीवन की याँत्रिकता; महानगरीतात; संसास्थ; अनुभव; अजनबीय; एकाकीकाम; आदि सब मनस्तत्तियों की अभिव्यक्ति नवगीत में हुई है।

प्राकृतिक नवगीतों में आत्मोप्लक्षी की सृष्टि अधिक होती थी। पर उपरोक्त उसमें आधुनिकता के उन फक्तों का बोध अधिक तीव्र होता गया; जो महानगरों की औद्योगिक सत्ता से संबंध है। आज का नवगीत भीड़ से भागड़ चलती दशक और उसमें छटपटाने वर्तुह व्यक्ति के उब; मिश्रित बोध और एकाकीय आदि भावों को अभिव्यक्त करता है।
नवगीत ने गीत-परंपरा को नवीन उपलब्धियों प्रदान की। ये नवीन उपलब्धियाँ आपूर्विकता के कारण ही संभव हो सकती हैं। आपूर्विकता के कारण ही नवगीत को बौद्धिकता पूर्ण गीत कहा गया है। नवगीत पर पतलायनवादी होने का आपेक्षिक वही कर सकते हैं; जो नवगीत के बारे में जानते न हों और जिन्होंने नवगीत को कभी पढ़ा नहीं हैं। नवगीत का नवीनतवादी विशेषता: उसके गामागित संदर्भों से जुड़ा होने का बोधक है। नवगीत यथार्थ जीवन की भोगी हुईं अनुभूतियों का कायां है। अतः उसके सामान्य संदर्भों से कटे होने या पतलायनवादी होने का प्रस्ताव ही नहीं उठता।

यथार्थ जीवन की गहराई में आकर नवगीत मानवीय चेतना के अनुसार विश्वसनीय स्वरों को उद्देशित करता है। वह मानवीय संदर्भों के बीच संदिग्ध परिवर्तनित होता हुआ गतिमान जीवन-विचार है। नई कविता की तरह नवगीत में विश्वसनीयता नहीं बन पाई है; जिस कारण नई कविता को अपेक्षा नवगीत में अधिक ताजगी और नयापन है। नवगीतकारों में जगत को देखने की हिंदी पूर्ववर्ती कवियों की पूर्वत्ता मिलन है।

नवगीत ने आपूर्विकतवाद के कारण ही जीवन के विभिन्न पहलुओं को उद्देशित किया गया है। नवगीत ने मानव-महानायकों के विचार के साथ-साथ उससे उपन्यास निराला; कुंठा; संग्राम; बिंदु; छीं; धक्का। घुटन; आदि स्थितियों का निरुपण एवं विस्तरण नवगीत में हुआ है। नागरिक किताब में सबसे अधिक भीड़-भाड़ में विशेषज्ञ व्यक्ति का विलुप्त तथा असीम-बोध और नागरिक जीवन के खोलखोल से ऊबे यात्रिक बहुतों के दुख-दर्द के चित्र उभरे हैं।

"बूढ़-बूढ़ रिस रही हवाई। बाहर भीतर धीरी घराए। सब कुंछ लगता उबा-उबा।"

नवगीतकारों ने न केवल निश्चेत होती हुई गतिमान को वैश्व-विश्व की 'दृष्टि' से नए विचार प्रदान किया, वरन् शिल्पगत उपकला को भी समृद्धि और संपन्नता प्रदान की। युग-बोध के परिप्रेक्ष्य में ज्ञानवादी एवं ज्ञानवादी भक्तवता कलात्मक उपकला एक और अभियान निर्माणकर्ता और शिल्पियों को सीमा कर दुके थे। अनुभूति के ज्ञान-क्षेत्रों का अभिव्यक्तिवर्ष नवगीतकारों के चेहरे से आबदग कर दिया, फिर यह संक्षिप्त स्वच्छता समयों और सजीव थी, जो नवगीतकारों के वैश्विक स्थिरता किया जाता है।

प्राचीन पीत-परंपरा में गीत को अधिक अनुभूति माना था, नवगीतकारों ने भी गीतों की आत्मा कलात्मकता को स्वीकार करके विद्यमान अनुभूतियों के आकलन की ओर संकेत किया है। उन्होंने संक्षिप्त स्वीकार का आधिकार
निष्ठा की भीति नवगीतकार छंदों के बंधन तोड़कर मुक्त और स्वचंद मान की ओर आसक्त हुए हैं। मुक्त छंद यथापि कोई विशेष छंद नहीं, बल्कि छंदों के कोरे और शुष्क कंधों के मुक्ति प्राप्त करता है। परस्पर-विशेषवज्ञत्व के कारण जैसे नवगीतकार ने दूसरे के वर्ण-विषय को न अपनाकर ‘वर्ण-विषय’ की विविधता गीत को प्रदान कर दी, वैसे ही एक नवगीतकार दूसरे नवगीतकार के छंद-विधान को नहीं अपनाया। नवगीत की प्रकृति ही ऐसी है कि उसकी रचना किसी विशिष्ट छंद अथवा लय में होती ही नहीं। ऐसी परिस्थिति में प्रत्येक नवगीतकार के पास अपने छंद विधान का समृद्ध कोश है।

नवगीतकारों द्वारा मुक्त छंद अपनाकर तुर्कबंदी को करार देने का अभ्यास यह नहीं है कि संबंधात्मक लय की भी परिस्मार्त हो जाय। गीत होने के नाते उसमें लय तो रहता ही है, संगीत बाहेर न हो, क्योंकि लय की विशिष्टता से गीत की असंगीत-विशिष्टताओं निष्पाद हो जाती है। इसीलिए उन्होंने लय की अनिवार्य आवश्यकता पर बल दिया है। उनकी छंद में लय गीत का वह अंतरालिक मूल है, जो उनके अर्थ-शिल्प के रूप को नियोजित किए रहता है। जब एक ही भाव व्यंजन को एक ही लय में व्यक्त करता है, तब उसकी संप्रेषण-शक्ति में वृद्धि ही नहीं होती, बल्कि उसकी प्रभाव क्षमता और स्मरणीयता भी बढ़ जाती है।

यथा -

निष्पा कर किसी तरह
dिव भर काम
पसर गई अंगना भर
भौजी सी शाम
नन्दी सी हवा गजब
मचा रही शोर
tोह तोह मानिए
अपने मन का ढोंग। (गाणप्रकाश धरमाय: 29)

नवगीतकार मानवते हैं कि संगीतसारिक कविता को क्षतिपूर्वकाता है, वह गीत की गाना बना देता है, किंतु गीत संगीत-निर्पेश कैसे समझ है - बाहे वह नवगीत ही क्यों न हो, क्योंकि गीत की सार्थकता ही संगीत है,
और संगीत स्वातांत्र्क और स्वाधिकता होता है। इसके लिए स्वतंत्रता के साथ-साथ छद्रों के बंधन होना भी आवश्यक है। नवगीतों में स्वातंत्र्क और ताल को नहीं अपनाया गया है, और न ही छद्रों के बंधन को स्वीकार किया गया है। नवगीतकारों ने युक्ति और स्वच्छों होकर गीतों की सर्जना की है। नवगीतकारों ने लय को महत्व दिया है, किंतु संगीत का बहिष्कार कर दिया है। प्राचीन परंपरागत गीत स्वातांत्र्क और स्वाधिकता होता है। नवगीतों में इसका प्रतीक करते हुए गीत में संगीतस्त्रांत्र्क लय की अनिवार्यता को स्वीकार किया गया है, जहाँ उसमें संगीत हो या न हो।

जीवन की विज्ञान का रखरखाव करने वाले नवगीतकारों ने अपने प्रतीकों का चयन भी जीवन के वैज्ञानिक से किया है। नवगीतकारों में आधुनिक बोध को अभिव्यक्ति करने का सहज प्रयास भी किया है। बिष्मों के आगमन से कात्यायन का 'निद्री अस्तित्व' स्थपत सूक्ष्म होकर संकेत बन गया है। इसीलिए गीत में बिष्मों का स्थान नगण्य है; फिर भी नवगीतों में बिष्मों के आ जाने से सींदू निखर गया है।

जहाँ तक गीत में आत्मा का सहज उद्वेदन या गायत्रिकाया होती है, वहीं तक वह अभिव्यक्ति रहता है, किंतु जब गायत्रिकाया का समर्थन बोधित करने से हो जाता है, तब व्याख्या जन्म लेकर तीव्र और पैने कोट चुभाता हुआ अपने अस्तित्व का आभास देने लगता है। नवगीतकारों ने सम-सामान्य विविधताओं, दृष्टिकोणों तथा असंगतियों-विसंगतियों पर काराक व्याख्या किया है।

नवगीतकारों ने विभिन्न शिल्पिक उपकरणों से अपने गीत के शिल्प पक्ष को उजागर किया है लेकिन अलंकार एक ऐसा पक्ष है, जिसमें उन्होंने काटई रंग प्रदर्शित नहीं की है।

नवगीत-शिल्पी भाषा का भी दुरुस्त निर्बंध है। भाषा के क्षेत्र में नवगीतकारों ने नई शाब्दिकों का प्रयोग न करके पुरानी शब्दवाली को अपनी कला के द्वारा इस प्रकार अभिव्यक्ति किया है कि वह कथा की अभिव्यक्ति में समर्थ होकर नवीनता से परिपूर्ण हो गई है। नवगीतकारों की भाषा भावानुकूल है। जहाँ इसी भाषा में नगरीय संस्कृत की जीवनता के साथ चिन्तित करने की कामता है, वही आंचलिकता को भावात्मक प्रस्तुत करने को सामाजिक भी। नवगीतकारों की भाषा कुपनामय मिश्रित है। आधुनिक जीवन के नये व्याख्या-क्रांति, धूल की अभिव्यक्ति, रोमांची भाषा, तीज-त्वचार की संस्कृतियां भाषा, आंचलिकता का स्पर्श, आदि से संपृक्त है।

अतः नवगीत की भाषा थोड़े से बीड़लाए हुए दुनिया जीवितों अथवा राजनीतिज्ञों की बेमानी भाषा नहीं
भान्य एवं भाषा दोनों हितों से नवगीतकार की भाषा वैयक्तिक-सैद्धान्तिक से परिपूर्ण है। नवगीतकार अपनी समाज और संस्कृति भाषा के माध्यम से ही आधुनिक युग-भोग की अपने गीतों में जीवन के साथ संयोजन करते में सफल हुए हैं।

नवगीतों की रचना भाषाय प्रथम है। कुंवर के जीवन में प्रहारी जीवन की रचनाएं को जोड़ते हुए अकेलेपर असहायता, लोहानिलाल और प्रकाश-विभाजन से उत्पन्न अध्यातिता का भाषाय प्रभाव शामिल है। धर्मविज्ञान भारतीय हममुख की कुंजाक्षी और निशा का बिंब खोंचा है तो वायुविश्वास तात्त्विक नारे के काव्य में पर्याप्त सूत्रों के बीच मुनियां की दुनिया, भगवान, वर-सत्ता, लालचारी का मार्मिक चित्रण है।

कवि ने आर्यक, सामाजिक, राजनीतिक विषयों को किसी भी अपनी भावनाओं एवं विचारों की माता में परिवर्तित किया है। सीता के प्रश्न-गीत के प्रश्न रूप से हुँकारे हैं, जो कुमार रवी मंद कुटूट प्रकृति-विचार के माध्यम से मानवीय आंत्रिकी और सांस्कृतिक को आशा देते हैं। प्रभाव ने जीवन के कठ-अनुभवों से आधुनिकता को बसाकर हुए, मानव मूल्यों का चित्रण किया है। इनके काव्य में प्रयुक्त भाषाय स्वरूपों का अध्ययन शैलीविज्ञान के विषयों, तङ्कियों, विचारों और सांस्कृतिक आधार पर किया गया है। काव्य में भाषा सहज सौंभव एवं भाषाय-विभाजन तरीकी है। इनकी श्रद्धालुता में आज के मुनियां के अनुभवों का रागात्मक प्रस्तुतीकरण है। गीत की प्रकृति तयार होती और उसकी आत्मा रागात्मक है। ये दोनों तन्त्र गीत के मौलिक तत्त्व हैं।

नवगीतों में अभिव्यक्ति के माध्यम से शब्दार्थ की अधिक अभिव्यक्ति दी गई है। 'लक्षण' प्रकृति, वस्तु भाषा ऐतिहासिक नामों के माध्यम से आए हैं। कितु व्याख्या के प्रति नवगीतों का निरोध आया है। काव्य में तब शब्दों की अपेक्षा तद्भव का प्रयोग अभिव्यक्त हुआ है। व्याख्यात्मक शब्दों में उन्हें ऐसी ध्वनि वाले शब्दों का प्रयोग किया है, जो अर्थ को अपनी ध्वन्यात्मक प्रभाव से प्रभावित कर सके।

**बाहर की भाव-भाषा**
**भीतर की सांस्थ-सांस्थ**
**धम-धम-धम**
**धू-ध्वनि-धार**
**कहते जाते?**

सनातन का प्रयोग प्रस्तुत करने के लिए भाव-भाषा और सांस्थ-सांस्थ का प्रयोग किया है तथा सनातन की तनाताहित को 'धम-धम-धम' कूदने की ध्वनि से व्यक्त किया है। 'उसी' शब्दों का प्रयोग काव्य की मांग है।
अभिव्यक्ति को शब्द-भावों के अनुसूचक कवि की भाषा में आए हैं। इनमें ये शब्द हैं; जो हिंदी शब्द-भंडार के अनुसार को बन चुके हैं तथा सामान्य व्यक्तिवर्ग में जिनका प्रयोग किया जाता है। कभी-कभी रचनाकार के भावात्मक शब्दकोश में शब्द न होने की स्थिति में एक शब्द रचे जाते हैं। नवगीतों में नारायण लाल परसार और कुंजा बेरेचन ने मनमुं, ओचलमुं, इम्मुं, गमलाभी का प्रयोग करके काव्य के भाव-पसंद को संस्कार किया है। काव्य में आंचलिक शब्द, ग्रामिक संस्कृति और सम्पत्ति की सुंगध लिए होते हैं। गीतों में आंचलिक शब्द, ग्रामिक संस्कृति और सम्पत्ति की सुंगधों के लिए दी गयी है। काव्य में आंचलिक शब्द दो रूपों में प्रयुक्त हुए हैं। एक तो वे जो मूलतः हिंदी के हैं, तो उनके उच्चारण का आंचलिक रूप से तदभवीकरण हुआ है, तो इसी अपनी आंचलिक प्रचारण लिए हुए हैं। इस आंचलिक प्रचारण से भाव की वैश्वित्ता एवं कवि का व्यक्तित्व शैली के रूप में उभर कर सामने आया है।

कहीं-कहीं लोकगीतों की पुंजों में काव्य की रचना की हुई है। काव्य में विशिष्ट क्रम के लिए मुहावरों एवं लोकप्रिय व्यवहारों का संदर्भ मुद्रित किया गया है। इस प्रकार काव्य में शब्द कच्चे के द्वारा भाषा में निकला तथा ग्रामीण भाषा में विकसित हुआ है। काव्य में अर्थ की सूचना व्यंजना की अभिव्यक्ति पर्यायों के माध्यम से हुई है। वर्तमान काल युग-शब्दों का प्रयोग अनुपम है, फिर भी उनका प्रयोग काव्य में विशिष्ट भावों, अंशकों एवं छंद की तर्कपूर्वी आदि के लिए ग्रामीण भाषा के तत्कालीन ग्रामीण भाषा के लिए व्यक्ति का अर्थ का प्रयोग अच्छे अर्थ में और बुरे एवं कटाक्ष के रूप में ‘बोना का’ प्रयोग करके अर्थ को व्यक्तित्व किया है।

में भी हूँ बोना, बापन हूँ
किंतु वीन पन मांगे है मैंने घरती से
दो पन हुमको खिच रहा है
उसे पार करो बड़ो। **

नवगीतों में कवि की सर्वजनात्मकता कालपना अनुभूति की समता तथा व्यक्तित्व की पहचान विधि के माध्यम से हुई है। विषयवस्तु का भाषा की काव्य भाषा का प्रणाला है। भारती के काव्य में विभिन्न विषय प्ररूप मान्य हैं मिलते हैं। इसी तरह परसार ने भी अपने काव्य में प्रकृति संबंधी संदर्भ विधि प्रयुक्त किए हैं। तथा राम सेंगर ने व्यवस्त्रक शब्दों के माध्यम से ‘भूख’ का संदर्भ विधि चित्रित किया है; जैसे -

टिठा की झोला
पेट की गहड़ीया
दुख - दरों की हमलुमिया
दुमिया से चुनु नहीं बही हो (65)
नवगीतों में प्रकृति प्राय: दो रूपों में ही अधिक विविध हुई है। एक स्वतंत्र रूप - रूप में तथा दूसरा मानवीय भावनाओं के आरोपण के रूप में। प्रकृति का स्वतंत्र विज्ञान वर्ष, दोपहर, घुप, बादल, नदी, रेत, धुंध, आदि के रूप में तथा मानव के सुख-दुख, हर्ष-विहार का विज्ञान मानवीकरण के रूप हुआ है। इस प्रकार नवगीत में मानने-हृदय और प्राकृतिक सौंदर्य का अद्वैत मिश्रण है।

काव्य में ‘विचलन’ साहित्य भाषा की सामान्य भाषा से अलग नवगीते बालक समस्त मुख साधन है। यह मानके रूपों से हटकर किया गया प्रयोग है। नवगीतों में अभिव्यक्ति पर बल देने के लिए कहीं प्रचलित शब्दों में व्याख्याता की हृदय से घनि-परीक्षण किया गया है, तो कहीं प्रचलित शब्द प्रयोग के स्थान पर अद्वैत-प्रचलित शब्दों का प्रयोग करके मानक रूपों से विचलन किया गया है। उदाहरणार्थ - ‘अविद लोचन’ इसका प्रचलित रूप ‘मिलत लोचन’ है।

नवगीत में सह प्रयोग विचलन मानवीकरण एवं विचलन विवरण के रूप में प्रयोग हुए हैं। सामान्यतः वाक्यों में क्रिया पद-बिंब वाक्यांत में आते हैं। किंतु काव्य में कथन पर बल देने के लिए वाक्यांत में आए हैं। यह काव्य का विचलन गुण है। काव्य में तुषार एवं तुषार की अभिव्यक्ति के लिए वाक्यांत से तुषार शब्दों का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार अनुप्रास अलंकार के माध्यम से काव्य में संगीतत्वकता एवं गीता आ गई है। समाधेय आकृति बालक शब्दों से काव्य-सौंदर्य में वृद्धि हुई है। भाव सौंदर्य को सरासर बनाने के लिए अर्थ-समांतरता का प्रयोग भी अधिक हुआ है।

‘बार्त’ संप्रेषण की मौलिक इकाई है। भाषाई संप्रेषण के अंतर्गत काव्य में निर्माण, प्रस्तावक, वंदेहर्ष, आज्ञाथ, इच्छार्थ, आदेशार्थ, निर्देशार्थ, आदि को व्यक्त किया गया है। प्रकृति कभी पूरी रचना से तो कभी शब्दों की आकृति से प्रकट हुई है। ‘बार्तलाम’ के माध्यम से ‘संवाद-शैली’ का प्रयोग भी हुआ है।